इकाई 11 रामकथा का प्रचलन (दक्षिण पूर्वी देशों में)

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 रामायण या रामकथा एक परिचय

11.3 भारत में विभिन्न रामकथाएँ (रामायण)

11.4 दक्षिणी पूर्वी देशों में रामकथा

- 11.4.1 कम्बोज में रामकथा
- 11.4.2 थाईलैण्ड में रामकथा
- 11.4.3 मलेशिया में रामकथा
- 11.4.4 लाओस में रामकथा
- 11.4.5 म्यांमार में रामकथा
- 11.4.6 बाली में रामकथा
- 11.4.7 यवद्वीप (जावा) में रामकथा

11.5 वर्तमान समय में दक्षिण पूर्वी देशों के कलाकारों द्वारा रामकथा–मंचन

11.6 सारांश

11.7 शब्दावली

11.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप–

- रामायण या रामकथा से परिचित हो पायेंगे।
- भारत में प्रचलित रामायण या विभिन्न रामकथाओं को जान सकेंगे।
- दक्षिण पूर्वी देशों कम्बोज, थाइलैण्ड, लाओस, म्यामांर, बाली एवं जावा में प्रचलित रामकथा के बारे में ज्ञान प्राप्त कर पायेंगे।
- दक्षिण पूर्वी देशों के कलाकारों द्वारा भारत में रामायण का मंचन कहाँ– कहाँ हुआ ज्ञात हो सकेगा।

11.1 प्रस्तावना

दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में भी लोगों के ह्रदय में राम जीवित हैं तथा रामायण कूंजती है क्योंकि ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों से ही एशिया के विभिन्न देशों में रामायण का प्रचार–प्रसार आरम्भ हो गया था और उससे प्रभावित होकर अनेक एशियाई भाषाओं में रामकथा पर आधारित उत्कृष्ट मौलिक रचना का सृजन हुआ, जो वर्तमान काल में भी अपने–अपने देश के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक रामायण एवं महाभारत है। कदाचित इस महाकाव्य की रचना के पूर्व

भी रामकथा लोकप्रिय थी। किन्तु वाल्मीकि की रचना कौशल ने इस कथा को अमर कर दिया। राम का चरित्र इतना उदात्त प्रेरणादायक और इतना अभिराम है कि स्वयं महर्षि वाल्मीकि ने कहा है कि–

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्चमहीतले।
तावद् रामायण कथा लोकेषु प्रचरियति।।

अर्थात् जब तक पृथ्वी पर पहाड़ रहेंगे, नदियाँ रहेगी तब तक राम कथा लोगों में प्रचलित रहेगी। महाकवि का विश्वास समय के अनुसार सिद्ध भी है।

प्रत्येक देश में जहाँ–जहाँ भी रामकथा पहुँची अपने देश की सामाजिक प्राथमिकताओं को दृष्टिगत करते हुए राम को कही भगवान के रूप में, कही एक रोमानी नायक की तरह, कही एक आदर्श पति, आकर्षक व्यक्तित्व, संयमी भाई के रूप में प्रमुखता दी गई है। सीता को कही एक निष्ठवान पत्नी की तो कहीं प्रतिरोध से भरी अर्धदेवी के चरित्र में ढाला गया। रावण के चरित्र–चित्रण में भी देश के सामाजिक परिवेश के आधार पर अंतर दिखता है। जैसे लाओस में प्रचलित रामायण में रावण या रावनामुआन को बुरा व्यक्ति नहीं अपितु एक चतुर, विद्वान व सुन्दर व मोहक वाले व्यक्ति के रूप में दिखाया जाता है। वाल्मीकि का प्रभाव तो इतना पडा कि 'चम्पा' जिसे वर्तमान में वियतनाम कहते है वहाँ पर 7वीं ईस्वी में इनका एक मन्दिर बनाया गया जिस पर संस्कृत में शिलालेख है। यह एशिया ही नहीं बल्कि पूरे संसार में वाल्मीकि का एकमात्र मन्दिर है। इस प्रकार रामायण कथा सबकी है और किसी की भी नहीं है। मूलकथा भारत से विभिन्न दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों में पहुँची और वहाँ की संस्कृति, रीति–रीवाजों, परम्पराओं में घुल–मिल गई। दक्षिण पूर्व एशिया की सभ्यता तथा संस्कृति भारतीय सभ्यता की ही देन है। प्राचीन भारत के लेखक **'रेजिनाल्ड ला'** ने अपनी पुस्तक दक्षिण पूर्वी एशिया की संस्कृति में स्पष्ट लिखा है कि आज जिस भाग को इण्डोनेशिया कहते हैं पहले मलयप्रायद्वीप, थाईलैण्ड तथा फ्रेंच इण्डो–चाइना कहा जाता था। वे सब संस्कृति तथा सभ्यता के लिए भारत के अत्यधिक ऋणी है। यह भी सिद्ध है कि ईसा से सैकड़ों वर्ष पूर्व भारतीय इन स्थानों में पहुँच थे। इन्हें 'स्वर्णभूमि' की संज्ञा दी गई थी तथा स्वर्णद्वीप (खुमाका) तथा (जावा) में भारतीयों ने अपना उपनिवेश बसा लिया था। कौटिल्य में अर्थशास्त्र में भी स्वर्णद्वीप का नाम आया। इसके अर्न्तगत रामकथा या रामायण का परिचय तथा भारत में विभिन्न रामायण या रामकथा का प्रचलन एवं इसके साथ ही साथ दक्षिण पूर्वी देशों में कम्बोज, थाइलैण्ड, मलेशिया, लाओस, म्यामांर, बाली, यवद्वीप (जावा), चम्पा (वियतनाम) में रामकथा का प्रचलन किस रूप में है तथा वहाँ के कलाकारों द्वारा रामकथा के मंचन में किस दृश्य को दृश्यांकित किया गया है इसको स्पष्ट किया जायेगा।

11.2 रामायण या रामकथा एक परिचय

विश्व के जिन महाकाव्यों को सार्वभौमिकता, सार्वकालिकता और गौरव प्राप्त है उनमें रामायण का विशिष्ट स्थान है। रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है। इसमें रामकथा आद्योपान्त वर्णित है। इसमें सात काण्ड शामिल हैं–बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड। इसमें लगभग (24500) श्लोक है। अतः इसे 'चतुर्विंशति साहस्री' संहिता भी कहते है।

यह मुख्यतः अनुष्टुप श्लोकों में हैं।

तुलसीदास जी ने कहा है कि–

एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानन्द पर धामा।।
व्यापक विश्वरूप भगवाना। तेहिं धरि देह चरितकृत नाना।।

अर्थात् प्रभु एक है उनका कोई रूप या नाम नहीं, उनकी कोई इच्छा नहीं, वे अजन्मा और परमानंद परमधाम हैं, सर्वव्यापी विश्वरूप हैं, उन्होंने अनेक रूप और शरीर धारण कर कई लीलाएँ भी की है। ईश्वर को किसी एक रूप या नाम से बाँधा नहीं जा सकता वो सर्वत्र व्याप्त है। राम के सर्वत्र व्याप्त होने की आस्था को सिर्फ एक देश तक ही सीमित नहीं किया जा सकता हैं। रामायण का बम्बई संस्करण (देवनागरी संस्करण) निर्णय सागर प्रेस ने बम्बई से 1902 ई. में प्रकाशित (सम्पादक के. वी. परव) यह संस्करण उत्तर तथा दक्षिण भारत में सबसे अधिक प्रचलित एवं प्रमाणिक है। इसकी सबसे प्रसिद्ध टीका (तिलक) है जिसे अपने प्रसिद्ध वैयाकरण विद्वान नागेश भट्ट ने अपने आश्रयदाता राजाराम के नाम से की है। पश्चिमोत्तर संस्करण यह एक प्रकार से कश्मीरी संस्करण है। यह संस्करण रिसर्च विभाग डी.ए. वी. कॉलेज लाहौर से 1823 ई. में प्रकाशित हुआ। इसके टीकाकार का नाम कटक है। दक्षिणात्य संस्करण भी कुम्भकोणम् (मद्रास) से 1929–30 ई. में प्रकाशित है। बम्बई संस्करण से इसके बहुत कम पाठ भेद है। बंगला और पश्चिमोत्तर संस्करणों में बहुत पाठभेद है। पाठभेद का मुख्य कारण रामायण की मौखिक परम्परा है। आधुनिक युग में जर्मन विद्वान् श्लेगल ने इसे 1100 ई. पू. में तथा याकोबी ने 800 ई. पू. से 500 ई. पू. के बीच रामायण की रचना मानी गयी है। कामिल बुल्के इसे 600 ई. पू. में स्वीकार करते हैं। मैकडोनल, काशीप्रसाद, जायसवाल तथा जयचन्द्र विद्यालंकार ने इसकी मूल रचना 500 ई. पू. में स्वीकार किया है। विन्टरनित्स इसकी रचना 300 ई. पू. में मानते हैं। इन विद्वानों को मान्यताओं के कई आधार है जैसे–रामायण में बौद्ध प्रभाव का अभाव, वैदिक युग की समाप्ति के बाद इसकी रचना, कोसल की राजधानी का प्रश्न, पाटलिपुत्र के विषय में रामायण का मौन धारण, विशाला और मिथिला का पार्थक्य, यूनानी प्रभाव का होना, रामायण के मौलिक अंश में राम को अवतार न मानना एवं 500 ई. पू. की संस्कृति से साम्य है।

11.3 भारत में विभिन्न रामकथाएँ (रामायण)

राम को चतुर्दिक फैलाने, रामकथा को लोकप्रिय बनाने का श्रेय केवल वाल्मीकि या रघुवंश महाकाव्य को ही नहीं है। राम को विष्णु के अवतार की मान्यता वाल्मीकि ने नहीं दी है। वे उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम अर्थात् आदर्श चरित्र वाला सिद्ध करते हैं। किन्तु रघुवंश से अनुमान होता है कि ईसा की आरम्भिक शताब्दी में उन्हें विष्णु के अवतार की मान्यता मिल चुकी थी। आठवीं शताब्दी के भवभूति के दो नाटकों में राम के चरित्र को देवतुल्य रूप में दर्शित किया गया है। सन् 1014 के जैन विद्वान 'आमतगात' ने राम को सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा लोक रक्षक माना हैं। भगवान के रूप में राम की आराधना 11वीं सदी में राम सम्प्रदाय की स्थापना से सिद्ध है। तेरहवीं सदी में मध्वाचार्य ने अपने शिष्य नरहरि को जगन्नाथ पुरी से श्रीराम की आदि मूर्ति को सन् 1264 में लाने के लिये भेजा था। इसी सदी के उत्तरार्ध में हेमाद्रि की रचना में राम का जन्मोत्सव चैत्र शुक्ल नवमी लिखा है जो आज तक मान्य है। इसी के आस–पास की अवधि की **'सात्वक संहिता'** में राम को भगवान के समान पूजन का उल्लेख है। प्राचीन वायुपुराण में भी राम के दैविक गुणों का वर्णन हैं।

पन्द्रहवीं सदी का **'अध्यात्म रामायण'** अद्वैत रूप से राम तथा जीवात्मा का सम्बन्ध मानता है।

इसके 15वें प्रकरण में राम गीता भी है। महाराष्ट्र के सन्त एकनाथ ने 16वीं सदी में **'भावार्थ रामायण'** की रचना की थी। मद्रास से प्रकाशित राम गीता में 108 उपनिषदों की सामग्री का निचोड़ भी है और मुख्य पात्र राम तथा हनुमान हैं। वक्ता राम हैं। इसके पहले ही रामानुजाचार्य की परम्परा में उसी सम्प्रदाय के स्वामी रामानन्द ने **'रामावत सम्प्रदाय'** बना डाला था। राम का महत्त्व उपनिषदों में भी था। तापनीयोपनिषद् में **'रां रामाय नमः'** वन्दना है। 11वीं सदी का तमिल भाषा का कम्ब रामायण है जो वाल्मीकि के आधार पर है। तमिल प्रदेश में रामभक्त सम्प्रदाय उन्हीं दिनों में स्थापित हुआ था। वह सम्प्रदाय तो अब नहीं है पर राम भक्तों की बहुत अधिक संख्या है।

महाराष्ट्र सन्त श्रीधर ने (सन् 1679–1728) **'राम विजय'** मराठी ग्रंथ की रचना किया था। इसके बहुत पहले 11वीं सदी में बौद्ध तांत्रिक रामाई पंडित ने 'शून्यवाद' ग्रंथ रचना की थी। गोस्वामी तुलसीदास जी की रामायण तो लगभग सन् 1584 में पूरी हुई थी। इसके बहुत पहले राम को उजागर कर दिया गया था। इसके पश्चात् वह इतने लोकप्रिय हो गये कि तुलसी के पहले बड़े–बड़े हिन्दू मुसलमान सन्त राम को ही भगवान का सम्बोधन मानने लगे। चाहे गुरु नानक हो, कबीर हो या 1463 के सन्त रज्जब हों। ऐसे राम यदि लोकप्रिय होकर सूदूर दक्षिण पूर्वी एशिया में विराजमान हो गये तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इस प्रकार लोक भाषाओं के माध्यम से रामकथा राजमहलों, मंदिरों और विद्वानों की पोथियों से निकलकर सामान्य जन की कुटिया तक पहुँच गयी। ईसा की 11 वीं शताब्दी से 17 वीं शताब्दी तक तमिलनाडु में **कम्बरामायण, केरल** में रामवर्मा द्वारा रामचरितम्, तेलगु भाषा में रंगनाथ–रामायण, कर्नाटक में नागचन्दपम्प की पम्प रामायण, गुजरात में गिरधर की गिरधर रामायण, उड़ीसा में बलरामदास कृत रामायण, असम में माधवकंदली की रामायण, अवधी में तुलसी कृत रामचरितमानस आदि लिखी गयीं, जिनका मूल स्रोत वाल्मीकि की रामायण ही है। इस प्रकार भगवान राम के देश भारत में लगभग 300 प्रकार की रामायण अर्थात् रामचरित लिखे गये हैं। इसी पर आधारित कालिदास का एक महाकाव्य 'रघुवंश' बहुत लोकप्रिय हो गया।

11.4 दक्षिणी पूर्वी देशों में रामकथा

दक्षिण पूर्वी एशिया में राम की कथा सबसे पहले कब पहुँची इसके विषय में अनेक मत हैं। पुष्ट प्रमाण मिलता है कि बौद्ध जातक 'दशरथ जातक' ईसा से 400 वर्ष पूर्व से सन् 200 वर्ष के भीतर लिखा गया और वही पहले इधर पहुँचा। जातक कथाओं में भिन्न प्रकार से राम गाथा है। इस प्रकार संस्कृत के ग्रन्थ तथा जातकों से मिलकर रामायण की सूर बदलती गयी और फिर स्थानीय सभ्यता की रुचि के अनुकूल परिवर्तन होता गया।

एक कथा के अनुसार ननकसिर जादिता नामक बारी (बाली) की बहन से ही बाली का विवाह हुआ था। वह सुग्रीव की भी बहन थी। बाली और सुग्रीव सगे भाई थे। बौद्ध ग्रन्थ की सुजाता जिसने बुद्ध को खीर खिलाकर समाधि के बाद व्रत समाप्त कराया था। वह अवतार सीता की थी। रावण के दस सिर नहीं हैं। वह बड़ा विद्वान तथा सुन्दर व्यक्ति था। एक बार सीता जी इसके प्रति आकृष्ट हो गयी थी। ऐसा विवरण भी प्राप्त होता है।

एक स्थान पर रावण की पुत्री सीता थी। काकवीन रामायण में सीता राम की पत्नी है जिनका रावण ने सूर्णपखा का बदला लेने के लिये अपहरण किया। हनुमान की माता का नाम नानकासी मिलता है।

भारत में प्राप्त रामायण में भी भिन्न–भिन्न कथायें हैं। एक जैन तथा बंगला के संस्करण के अनुसार बनवास से लौटने के बाद सीता की दासियों ने सीता से कहा कि रावण कैसा था उसका चित्र बनाकर दिखलाइये। सीता ने चित्र बना दिया। वह चित्र राम के सिंहासन पर किसी प्रकार पहुँच गया। राम बिना देखे उस पर बैठ गये तो रावण चीख उठा कि मेरे सिर पर क्यों बैठे हो। रावण की बात सुनकर राम चौंक उठे। चित्र देखा। बनाने वाले का नाम पता चला तो लक्ष्मण को आदेश दिया सीता की हत्या कर दो। लक्ष्मण सीता को बहका कर ले गये पर उनके गर्भवती होने तथा करुणा के कारण जंगल में छोड़ दिया और एक कुत्ते को मारकर उसका रक्त राम को दिखा दिया। सीता की रक्षा के लिये इन्द्र ने ही कुत्ते का रूप धारण किया था।

अंगलाग्रन्थ में एक कथा है प्राप्त होती कि कैकेयी ने स्वयं रावण का चित्र बनाकर उसे सीता की खाट पर रख दिया था जिसे राम ने देख लिया। इसी से कैकेयी की पुत्री का नाम ककू (काकुआ) दिया है। उलट–पलट कर सीता बनवास की कथा अनेक भारतीय रामायण में है। लेखक जैकोबी के अनुसार भारत में रामकथा सबसे पहले कौसल देश के दूसरी सदी में शुरु हुई थी। उसके बाद सीता–राम जनता के सामने आये पर इस मत से वाल्मीकि रामायण की प्राचीनता समाप्त हो जाती है। दक्षिण पूर्व एशिया के अनेक देशों का नाम हमारे प्राचीन ग्रन्थों में आया है। अथर्ववेद के परिशिष्ट में जिसका समय 8वीं या 9वीं शती तक कहा जाता है। ताम्रलिपि के अन्तर्राष्ट्रीय बन्दरगाह का उल्लेख है। अशोक के महाभिलेख ई॰ पूर्व 247 का समय तीन स्थानों स्वर्णभूमि, तक्कोला तथा भवद्वीप का उल्लेख करता है। इन देशों में रामायण की ध्वनि तथा उच्चारण बदलता गया। मलयप्रदीप ने अपने शासन काल में राजभवन गुप्त के सन् 215 में चीन के नरेश को जो पत्र लिखा था उससे पता चलता है कि वहाँ संस्कृत भाषा का प्रचलन था तथा गंधमादन से ऊँची अद्धालिकाएँ उनके राज्य में थी। इन्हीं के शासनकाल में तथा चीनी स्रोत में लंका का नाम लागंका मिलता है तथा यह लंगक शुक (लंकापुरी) पतानी नामक स्थान के निकट था। काकाविन रामायण में लंका के स्थान का पता नहीं है। मलय रामायण के अनुसार सीता हरण के बाद रावण को पता चला कि सीता उसकी पुत्री है। उसी के अनुसार हनुमान सीता राम के पुत्र थे।

11.4.1 कम्बोज में रामकथा

कम्बोज (कम्बोडिया) वर्तमान कम्यूचिया में खमेर अर्थात् क्षत्रिय वंश का राज्य था। ये नरेश बुद्ध के धर्म को भी प्रश्रय देते थे। इसके साथ ही शैव भी थे। यहाँ भगवान त्रिभुवनेश्वर के मंदिर में नित्य रामायण तथा महाभारत दोनों का पाठ होता था किन्तु रामायण अधिक लोकप्रिय था। त्रिभुवनेश्वर के मंदिर तथा पूजन का आलेख प्राप्त है। विदेशी तथा देशी लेखकों ने इन खुदे लेखों का वर्णन किया है। ऐसा लगता है कि यहीं वाल्मीकि रामायण चम्पा देश (वर्तमान वियतनाम) पहुँची थी और इसकी लोकप्रियता के कारण ही यहाँ वाल्मीकि का मंदिर बनाया गया था जो एशिया ही नहीं संसार में प्रसिद्ध हैं। कम्बोज में रामायण के राम इतने प्रिय थे कि अपने नरेश की तुलना वे राम से करते थे। कम्बोज (कम्बोडिया) में तो राजधानी का नाम अजुध्या तथा नरेश अपने नाम के आगे राम लगाते थे। शैलेन्द्र नरेश भी यही करते थे। शैलेन्द्र साम्राज्य का अंत 9वीं सदी में हुआ। तब दूसरा पूर्ण हिन्दू राज्य कायम हुआ। यह

15वीं तक चला। इसके अन्तिम नरेश ने मुस्लिम धर्म स्वीकार कर लिया इसलिए हिन्दू साम्राज्य समाप्त हुआ। फिर ब्रिटेन का तथा 1623 से डच शासन, 1811 में अंग्रज फिर 1915 की संधि के बाद डच वापस आ गये। सन् 889 से 907 तक कम्बोज में राजा यशोवर्मन का राज्य था। उनके समय में प्रवरसेन उत्तरी वर्मा ने प्राकृत भाषा में सेतुबन्ध की रचना की थी तथा रावण वध भी प्राकृत भाषा में है। 9वीं सदी में ये ग्रन्थ बहुत लोकप्रिय हो गये थे। वही रामकेत्ति ग्रन्थ छठी–सातवीं शताब्दी में रचा गया जिसमें 5034 पद है। रामकेत्ति द्वितीय की रचना 8वीं सदी की है जिसमें 1774 पद है। इसमें ही अपने नरेश की तुलना राम से की गई है। राम की कथा तो हर दक्षिण पूर्व एशिया में उनकी संस्कृति के अनुसार बदलती गई। रामकेत्ति द्वितीय में लिखा है कि सीता अपने पति से रुष्ट होकर नागदेश में रहने लगी। नागदेश से तात्पर्य पाताल लोक का होगा। कम्बोज में रामायण की लोकप्रियता का एक स्पष्ट उदाहरण वहाँ का प्राचीन हल्का नाटक 'लखोन खोल' नामक आदि ढंग का हल्का नाटक नृत्य है। यहाँ लखोन शब्द से तात्पर्य लक्ष्मण से है। इतिहासकार मजमूदार की एक पुस्तक काम्बोज के आलेखों–शिलालेखों आदि पर है। उनके अनुसार पीतल पर लिखा प्रथम लेख प्रम्बनम में 9वीं शताब्दी के मध्य का तथा दूसरा पीतल पर लेख प्रनतरन में 1319–1454 के बीच का है। इनसे यह पता नहीं चलता कि रामायण वहाँ कैसे पहुँची किन्तु यह पता चलता है कि सन् 907 में 'जलुम' रामगाथा पढ़ते सुने गये थे। किन्तु 10 वीं सदी में रामायण का परिवर्तित रूप वहाँ प्रचलित था। इण्डोनेशिया के अतिरिक्त कम्बोडिया के अंकोर वाट, अंकोरथाम आदि स्थानों पर रामकथा के आकर्षक शिलाचित्र है। इन शिलाचित्र श्रृंखलाओं में थाइलैण्ड का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है, जहाँ राजभवन परिसर में एक बौद्धविहार में एक सौ बावन संगरमरी शिलापटों पर रामकथा के चित्र उत्कीर्ण है। इनके अतिरिक्त आदि महाकाव्य रामायण की लोकप्रियता के साक्ष्य दक्षिण पूर्व एशिया की शिलाचित्र श्रृंखलाएँ भी है, जिनमें रामकथा रूपायित है। आश्चर्य की बात तो यह है कि दक्षिण पूर्व एशिया के शिलाचित्रों में रामकथा की जितनी विस्तृत अभिव्यक्ति हुई है, उतनी रामायण की जन्म भूमि भारत में दुर्लभ है।

11.4.2 थाईलैण्ड में रामकथा

थाईलैण्ड दक्षिण–पूर्व एशिया का एक प्रमुख देश है, जिसमें संस्कृत अध्ययन की सुदृढ़ परम्परा रही है। संस्कृत भाषा में निबद्ध पौराणिक वाङ्मय, धर्मशास्त्र, विधिशास्त्र, राजशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र का यहाँ की संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा। यह सांस्कृतिक प्रभाव, दक्षिण–पूर्व एशिया विशेष रूप से थाईलैण्ड की संस्कृति का संस्कृतीकरण ही है। थाईभाषा, साहित्य एवं कला पर अपना छाप है। यदि थाई भाषा के स्वरूप का ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया जाय जो हम पाते हैं कि थाईभाषा में संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव शब्दों का बाहुल्य है।

ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न शाखाओं, अधिकार–पदों, प्रान्तों, नगरों आदि के नाम संस्कृत मूल के लगते हैं। थाइलैण्ड में आदि कवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण का भी गहन प्रभाव है। रामायण एवं रामकथा के आधार पर ही थाई भाषा की रामायण **'रामकियेन'** की रचना हुई। रामकियेन के पात्रों के नाम भी संस्कृत नामों के थाई रूपान्तर है। थाइलैण्ड के मार्गों, वनस्पतियों, होटलों, भवनों, पुलों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के नाम रामकियेन के पात्रों के नाम पर रखे गये हैं। इस प्रकार रामायण संस्कृति ने थाइलैण्ड के साहित्य, संस्कृति, नाट्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला, पुरातत्त्व, स्थापत्य आदि को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। थाईलैण्ड के राजवंश संस्कृत एवं रामायण में अत्यधिक अभिरूचि रखता है।

थाइलैण्ड की रामायण के विषय में कहा जाता है कि यह भारत से नहीं बल्कि इंडोनेशिया से कुछ 900 साल पहले यहाँ आई तथा रामायण के चार रूपों–खोन, लाखोन, नांग व हुन के रूप में प्रचलित हुई। रामाकीन या रामायण में नवजात शिशु सम्बन्धी थाई व बौद्ध रिवाजों का प्रमुखता से उल्लेख है।

थाइदेश की भूमि पर भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की संस्था ICCR **'भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्'** ने शिल्पाकोर्न यूनिवर्सिटी ने इस पीठ को स्थायी रूप से स्थापित करते हुए अभ्यागत आचार्य के रूप में नियुक्त प्रो॰ सत्यव्रत शास्त्री ने थाइलैण्ड के थाई रामायण की कथा को आधार बनाकर पच्चीस सर्गों का श्री रामकीर्ति महाकाव्यम् नामक महाकाव्य रचा था।

'थाई–भारत कल्चरल लंज' एवं **'इण्डिया स्टडीज सेन्टर'** ने वर्ष भर 'संस्कृत एवं संस्कृति' से सम्बन्ध कार्यक्रमों को बैकांक में इन संस्थाओं के तत्त्वावधान में 1986, 1994 एवं 2000 में क्रमशः द्वितीय ग्यारहवीं एवं सत्रहवीं इण्टरनेशनल रामायण कान्फ्रेंस हुई था।

11.4.3 मलेशिया में रामकथा

मलेशिया में चमड़े की कठपुतली बनाकर छलांग नामक तमाशा होता था जिसे 'यंगकुलित' करते थे तथा कथा करने वालों को **'पेरली पुरलर लोंग'** कहते थे। मलेशिया में पहुँचते–पहुँचते रामायण का रूप ही बदल गया था। हनुमान सीता–राम के पुत्र हो गये थे। हनुमान ने राजकुमारी रेनक जिंतन से विवाह किया तथा श्वसुर के राज्य तहविल के शासक हुए। रेनक–रेणुका का अपभ्रंश हो सकता है। मलेशिया में इस्लामी प्रभाव वाली रामायण **'हिकायत सेरी रामा'** भी प्रचलित है। राम की भक्ति से जुड़े तमाम मंदिर और निशानियों के हजारों साल पुराने साक्ष्य मिलते हैं, मलेशिया में कुआलांलपुर से पचास किमी दूर आईलैण्ड की सीमा के पास साल 1989 में प्रभु राम का सबसे भव्यमंदिर बनवाया गया है, जहाँ रामकथा से जुड़ी एक हजार एक प्रतिमाएँ और तस्वीरें लगाई गई है।

11.4.4 लाओस में रामकथा

कम्बोज तथा श्याम देश से होता हुआ रामायण 'लाओस' पहुँचा। **'फ्रा लाक फ्रा लाम'** (प्रिय लक्ष्मण और प्रिय राम) लाओस मे लोकप्रिय रामायण के तीन रूपान्तरणों में से एक है। इसमें लाओस के जन जीवन का समग्र विश्वकोष है। लाओस में प्रचलित रामायण में आपसी स्नेह सम्बन्धों को रेखांकित किया गया है।

11.4.5 म्यांमार में रामकथा

म्यांमार में 1973 में एक बौद्ध मठ से 80 ताड़पत्रों पर **'रामावत्थु'** नामक प्राचीन रामायण की पाण्डुलिपि मिली थी। इसके अतिरिक्त यहाँ अन्य पाँच विभिन्न प्रकार की रामायण है। म्यांमार की रामायण में भातृप्रेम का स्वर प्रमुखता से है।

11.4.6 बाली में रामकथा

वारी के नाम का अपभ्रंश की बाली द्वीप का नाम पड़ा। बाली में प्राप्त रामायण **'मातृकाकार लिपि'** में है। यह संस्कृत भाषा में है। इसका नाम **'चरित्र रामायण'** है तथा इनमें रामकथा संक्षेप में दी गयी है। पाँच पद में आरम्भ में संस्कृत स्वर–व्यंजन से प्रारम्भ होता है–**'अयोध्यापति'। 'आचार्य विनय इष्टकम्प'**। अन्तिम पद में **'हत शत्रतु'**

इत्यादि। बाली में सात ताड़पत्र पर पूरी रामकथा दे दी गई है। यह ताड़पत्र लीडन विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में सुरक्षित है। इसमें राम की माता का नाम सुमित्रा लिखा है तथा लिखा है कि श्रीराम ने एक लाख वर्ष राज्य किया था। 51 छन्दों में पदों में पूरा रामायण आ गया। वास्तविक रूप से बाली में जिस भाषा में रामायण है उसे काकाविन रामायण कहते हैं। रामकथा फैलते–फैलते अपना रूप तथा उच्चारण भी बदलती गयी। नाम भी बदल गये उच्चारण भी बदलते गये। दशरथ जातक (बौद्ध) ईसा से 400 ईसा पूर्व तक पुराना माना जाता है। इसका अनुवाद चीनी भाषा में भी है। भारतीय ग्रंथों का अनुवाद एक सोगोदी के भिक्षु ने ईसा पूर्व 200–280 में किया था। उसमें राम बनवास, सीताहरण, जटायु–युद्ध, लंकायुद्ध, सुग्रीव वाली की लड़ाई यहाँ तक की सीता का अग्नि प्रवेश भी है। ये जातक कथायें है। एक जातक में सीता को दशरथ की पुत्री भी लिखा है।

11.4.7 यवद्वीप (जावा) में रामकथा

हिन्दू सभ्यता के विस्तार की जानकारी वाल्मीकि को भी थी तभी तो उनके रामायण में यवद्वीप (जावा) का उल्लेख है। इसी द्वीप और आसपास के द्वीपों में 9वीं से 11 वीं सदी तक शैलेन्द्र साम्राज्य था। इसकी राजधानी यजपाहित थी जो अयोध्या में मिलता–जुलता है। इसी साम्राज्य में ही बलिपुत्र **'देव'** नामक एक नरेश ने मगध में नालन्दा में एक विहार बौद्धों के लिए बनवाया था। मगध के उस समय के राजा देवपाल के पास दूत भेजकर उनसे अनुरोध किया था कि उनके बनवाये विहार के लिए पाँच ग्राम दे दे। देवपाल का समय ईस्वी सन 839–708 तक माना जाता है तथा इसी शैलेन्द्र साम्राज्य के विषय में जावा में संजय के एक शिलालेख से पता चलता है कि ई. सन् 9 में वे शैलेन्द्र राजा के खु यानी प्रान्तीय सूबेदार थे। उस समय सुमात्रा का नाम '**श्री विजय**' था। सन् 688 के कोटा काटर (बैकांक) में एक आलेख से पता चलता है कि इन्होंने शैलेन्द्र के लिए अनेक द्वीपों पर विजय प्राप्त की थी। केन्द्रीय जावा तक इन्होंने शैलेन्द्र साम्राज्य का विस्तार किया था। सन् 907 के एक आलेख से भी इसकी पुष्टि होती है। यह लेख शंकर भगवान की स्तुति से प्रारम्भ होता है। इससे प्रकट है कि संजय की विजय की कालिदास के रघुवंश के राघव से तुलना की गयी है। इन आलेखों से पता चलता है कि रावण का नाम 825 ई. में, लंका (लंगव) का 862 में, 879 में अयोध्या नामक व्यक्ति का, 880 में हनुमान के पिता पवन, 880 में राघव, 907 में लक्ष्मण, 880 में राम, 910 में सीता, 879 में भरत, 982 में वाली तथा सन् 920 में लक्ष्मण का नाम स्थानीय अपभ्रंश में उत्कीर्ण है। जावा में रामायण कब पहुँचा, इस विषय में केवल ऐतिहासिक ऊहापोह के अलावा निश्चित लिखना कठिन है। सर्वविदित है कि संस्कृत भाषा में तो यहाँ ईसा से तीसरी चौथी शताब्दी तक पहुँच चुकी थी। उस द्वीप में तथा समस्त दक्षिण पूर्वी एशिया में किसी भट्टि कवि द्वारा लिखित संस्कृत भाषा में भट्टिकाव्य का प्रचार अवश्य था। अतः उसी के आधार पर प्राचीन जावा की भाषा में जो उत्कीर्ण अंश मिलता है उसमें बालकाण्ड के शुरु के अध्याय नहीं हैं। 1 से 9 फलक या पट्टी में बालकाण्ड के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश तथा उत्तरकाण्ड के भी कुछ दृश्य प्राप्त है। मनतरन से प्राप्त फलक में केवल हनुमान की कथा है एवं कुम्भकर्ण वध तक की भी कथा है। जावा की वास्तविक भाषा 7 करोड़ जनसंख्या की भाषा है संस्कृत का उसी प्रकार प्रचार–प्रसार था जैसे आज हमारे बीच है। यहाँ के इतिहास से प्रकट है कि हिन्दू बौद्ध संस्कृति 9वीं सदी तक पूरे क्षेत्र में फैल गयी थी। भट्टि नामक संस्कृत के किसी विद्वान ने संस्कृत भाषा में '**भट्टिकाव्य**' लिखा था जिसमें रामायण की कथा है। इस प्रकार जावा के रामायण से यह स्पष्ट होता है कि उसका दो तिहाई अंश वाल्मीकि रामायण से नहीं अपितु भट्टिकाव्य से

लिया गया है। जावा का रामायण तथा योगेश्वर नामक कवि का समय 856 ई. प्रमाणित है। राजनैतिक तथा धार्मिक परिवर्तनों के झंझावात में जावा का रामायण तथा उसकी जावा की कलुद पहाडी या चण्डीतरान प्रजापति के विहार या देवालयों में उत्कीर्ण लेखों से प्रकट है कि 17वीं–18वीं सदी में राजा कर्तुसर तथा राजा सुरकर्त के शासनकाल में रामायण को सम्भवतः पुनः जीवित किया था। बाली से होकर जो रामायण जावा को प्राप्त हुआ था वह वास्तव में मलय देश से मलय भाषा में प्राप्त रामायण **'हीकायत श्री रामा'** थी जिसने बाली को प्रेरित किया था और आज भी बाली में वाल्मीकि और तुलसी बड़े लोकप्रिय है। ध्यातव्य यह है कि मलय भाषा का प्रभाव समूचे सुदूर पूर्व दक्षिण एशिया के साथ मेडागास्कर द्वीप तक अभी भी है तथा संस्कृत भाषा का आधार समूचे क्षेत्र में व्याप्त है चाहे श्रीलंका के जयवर्धन हो या हिन्द एशिया के सुकर्णा या सुहार्तो हो। वास्तव में हिन्द से ही हिन्द एशिया जुड़ा हुआ है। जावा की भाषा को कावी कहते हैं। यह विदित है कि शैलेन्द्र साम्राज्य में अधिकांश बौद्ध थे। उनके बाद 9वीं सदी से हिन्दू साम्राज्य में सभी नरेश शैवमतावलम्बी थे। उन्हीं के समय 9वीं शताब्दी का **पांनातराना नामक मंदिर की भित्तियों** पर रामकथा उत्कीर्ण है वह स्पष्ट रूप से 18वीं शताब्दी का है और जावा के कावी भाषा में लिखित **'काकावीन रामायण'** पर आधारित है। जिसके 106 शिलाचित्रों में पवनसुत के लंकाप्रवेश में कुम्भकर्ण वध तक की कथा है। काकावीन रामायण में सीता राम की पत्नी है जिनका रावण ने शूर्पणखा का बदला लेने के लिए अपहरण किया था। हनुमान की माता का नाम नानकासी मिलता हैं। काकावीन पर शैव सम्प्रदाय की छाप है क्योंकि इण्डोनेशिया के एक प्रमुख द्वीप जावा के हरे–भरे मनमोहक मैदान के मध्य प्रबनान का भग्नावशेष है, जिसे लोग **'चंडी लारा जोंगरामा'** भी कहते है। इस परिसर के मध्य उत्तर से दक्षिण पंक्तिबद्ध तीन मन्दिर है। शिवमंदिर बीच में है। शिवमंदिर के उत्तर में ब्रह्मा और दक्षिण में विष्णु मन्दिर है। कैमलन के अनुसार शिवमंदिर में बयालिस और ब्रह्म मन्दिर में तीस रामायण शिलाचित्र है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धाकाण्ड में जावा का उल्लेख हुआ है। जावा में रामायण शिलाचित्रों की बहुलता आदिकवि के कथन की प्रासंगिकता को रेखांकित करतें हैं।

11.5 वर्तमान समय में दक्षिण पूर्वी एशियाई (आसियान) देशों के कलाकारों द्वारा रामकथा–मंचन

'फाम आन फोंग' 1911 से वियतनाम की ओपरा बैल कम्पनी में प्रमुख नर्तक तथा नृत्यनिर्देशक के रूप में कार्यरत है। रूस, दक्षिण कोरिया, थाईलैण्ड, चीन, इण्डानेशिया, जापान, लाओस, ब्रिटेन और भारत में सामूहिक नृत्य प्रस्तुतियाँ भी दे चुके है। सदस्यों की तरह फोंग भी नृत्य समूह के सदस्यों की भिन्न पृष्ठभूमियों की चर्चा करते हैं। क्या इन भिन्न पृष्ठभूमियों से नृत्य नाटिका के संयोजन में दिक्कत आई? पूछने पर वे कहते है कि हाँ विभिन्न देशों की नृत्य शैलियाँ अलग है, इसलिए कलाकारों की भाव भंगिमाए भी बिल्कुल अलग होती है। समूह के कुछ कलाकारों ने केवल आधुनिक तो कुछ ने समकालीन या फिर यूरोपीय पद्धति का नृत्य प्रशिक्षण लिया हुआ था। इसलिए भिन्न–भिन्न भावभंगिमाओं को मंच पर एकरूप करने में कुछ कठिनाईयाँ अवश्य आई थी। लेकिन इन्होंने इसे चुनौती की तरह लिया और इसका अभिनय प्रयोग सफल रहा।

फोंग के अनुसार कथा सभी आसियान देशों में बहुत अधिक लोकप्रिय है। आसियान दस दक्षिण पूर्व एशियाई देशों का समूह है। इस समूह का लक्ष्य आपसी देशों में आर्थिक विकास और व्यापार को बढ़ावा देने के साथ क्षेत्र में शान्ति और स्थिरता कायम रखना है। आसियान की स्थापना 8 अगस्त 1960 को बैंकाक में की गई थी। किन्तु रामायण का मूलस्थान भारत है। इसके अतिरिक्त भारत की तरह मलेशिया, सिंगापुर, कंबोडिया, थाईलैण्ड आदि देशों की प्राचीन संस्कृति का अभिन्न अंग है। राम की अनुभूति में राजा दशरथ की भूमिका अभिनीत कर रहे फोंग की नजर में भारत सांस्कृतिक संपदा का धनी देश है तथा भारतीय सौहार्दपूर्ण व्यवहार तथा आतिथ्य में कुशल है। रामायण की कथा का समाज की दृष्टि से क्या महत्त्व है? इस प्रश्न पर फोंग कहते है कि रामायण की कथा केवल जीने का सही तरीका ही नहीं सिखाती है, बल्कि यह भी बताता है कि सहयोग की भावना हो और राह सच्ची हो तो कठिन से कठिन कार्य भी आसान हो जाता है। दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों की रामकथा का मंचन अब भारत देश में सम्पन्न हुआ। भारत–आसियान सम्बन्धों में रामलहर दिखाई दे रही है। इसका बड़ी कारण यह है कि आसियान के दस देशों के 120 कलाकारों द्वारा रामकथा का मंचन किया। दिल्ली में रामायण महोत्सव में **फिलीपींस, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, म्यांमार, ब्रुनेई, लाओस और सिंगापुर** के कलाकारों द्वारा रामकथा का मंचन किया गया हैं। राम के देश में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को रामकथा सुनाने का मौका मिला। कहीं रामायण का नाम आया है तो कहीं कथा में कुछ अन्तर है। लेकिन राम के नाम के साथ कही बदलाव नहीं है अर्थात् जो राम हिन्दुस्तान में करोड़ों लोगों के आस्था का केन्द्र है वही राम दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में भी भक्ति का केन्द्र है तभी हजारों साल पुरानी रामकथा का मंचन आज भी जारी है। थाईलैण्ड के कलाकार भगवान राम की जन्मकथा और सीता स्वयंवर का मंचन किया। सिंगापुर के कलाकार अशोकवाटिका में हनुमान जी के पहली बार माँ सीता के दर्शन की कथा का मंचन किया। इण्डोनेशियाई कलाकारों ने लखनऊ में सुग्रीव–बाली युद्ध का मंचन और लखनऊ में ही राम–रावण युद्ध का मंचन किया। अयोध्या में थाइलैण्ड के कलाकारों ने राम–रावण युद्ध का मंचन किया। कोलकाता में फिलीपींस और ब्रुनेई के कलाकारों ने माँ सीता की अग्नि परीक्षा का मंचन किया था।

बोध प्रश्न –क

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों का चयन कीजिए –

1. रामायण के लेखक का क्या नाम है? (महर्षि वाल्मीकि /महर्षि व्यास)
2. मैकडॉनल के अनुसार रामायण का समय क्या है? (500 ई. पू. के बाद/300 ई. पू. के बाद)
3. रामायण कितने काण्डों में विभक्त है? (7 काण्ड/14 काण्ड)
4. जावा की भाषा को क्या कहते हैं ? (कावी /जावी)

बोध प्रश्न –ख

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. रामायण या रामकथा कम्बोज में .....नाम से मिलती है? (रामकेर/रामकियन)
2. रामायण या रामकथा लाओस में ..... नाम से मिलती है? (फ्रलाक–फ्रराम/रामवत्थु)

3. रामायण या रामकथा म्यामार में.....नाम से मिलती है? (रामबन्धु, रामवत्थु, और रामथग्गियन/हेकायत)

4. दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में .....अनेक रूप मौजूद है। (रामकथा के/विष्णु कथा के)

5. बाली में प्राप्त रामायण **'मातृकाकार लिपि'** में है।

बोध प्रश्न–ग

1. रामायण या रामकथा का म्यांमार में प्रचलन को स्पष्ट कीजिए।

.....

2. रामायण या रामकथा का लाओस में प्रचलन को स्पष्ट कीजिए।

.....

अभ्यास प्रश्न

1. रामायण या रामकथा प्रचलन दक्षिण पूर्वी देशों में स्पष्ट करके लिखिए।

11.6 सारांश

रामायण ने धर्म, कर्म, समर्पण, आस्था, निष्ठा और माता–पिता के प्रति कर्तव्य के संदेश का प्रचार–प्रसार किया है। दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में रामकथा के अनेक रूप मौजूद है। रामकथा वहाँ के जीवन और संस्कृति का हिस्सा बन चुकी है। दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की लोक संस्कृति में रामायण एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। **थाईलैण्ड में इसे रामाकीन अर्थात् रामकीर्ति, कम्बोडिया में रामकेर, म्यांमार में रामबन्धु, रामवत्थु और रामथग्गियन, मलेशिया में हेकायत और लाओस में फ्रलक–फ्राम अर्थात् श्री लक्ष्मण–श्रीराम कहा जाता। केवल इंडोनेशिया में ही रामकथा के लिए 'रामायण' के स्थान पर इसे रामायण काकविन अर्थात् रामायण काव्य कहा जाता है।** महत्वपूर्ण बात यह है कि दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में कई मुस्लिम देश है जो पूर्ण श्रद्धा के साथ रामकथा का मंचन करते है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपकोरामायण या रामकथा से, भारत में प्रचलित रामायण या विभिन्न रामकथाओं से, दक्षिण पूर्वी देशों कम्बोज, थाइलैण्ड, लाओस, म्यामांर, बाली एवं जावा में प्रचलित रामकथा के बारे में औरदक्षिण पूर्वी देशों के कलाकारों द्वारा भारत में रामायण का मंचन कहाँ– कहाँ हुआ इसका ज्ञान अवश्य ही प्राप्त हुआ होगा।

11.7 शब्दावली

1	**प्रचार– प्रसार**	–	**विज्ञापन करना**
2	**सृजन**	–	**निर्माण**
3	**गौरव**	–	**आत्मसम्मान**
4	**सार्वभौमिकता**	–	**तीनों काल में सत्य**
5	**समग्र**	–	**सम्पूर्ण**
6	**पाण्डुलिपि**	–	**मूलरूप में लिखा गया**
7	**उत्त्कीर्ण**	–	**लिखा गया**

8 **शिलालेख** – **पत्थर पर लेख**

9 **अभिलेख** – **कागज के लेख**

11.8 कुछ उपयोगी पुस्तके

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' एम. आर. काले के नोट्स सहित संस्करण, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली 1969
2. ए. बी. कीथ 'History of Sanskrit Literature' अनुवादक डॉ. मंगलदेव शास्त्री 1962
3. संस्कृत साहित्य में नीतिकथा का उद्‌गम एवं विकास, प्रभाकर नारायण कवठेकर, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, 1968
5. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायण लाल विजयकुमार, 2018
6. रामकथा उत्पत्ति और विकास, डॉ. कामिल बुल्के
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास, विन्टरनित्स, 1987
8. रामायण काकविन (इण्डोनेशिया की रामकथा) निवेदन भाग, अनुवादक डॉ॰ चन्द्रदत्त पालीवाल हिन्दी संस्थान लखनऊ।
9. विश्व पटल पर संस्कृत साहित्य, डा. देशराज, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2020

11.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–क

(1) महर्षि वाल्मीकि (2) 500 ई. पू. के बाद (3) 7 काण्ड (4) कावी

बोध प्रश्न–ख

(1) रामकेर (2) फ्रलाक फ्राम (3) रामवत्थु (4) रामकथा के (5) मातृकाकार लिपि

बोध प्रश्न–ग

1. **रामायण या रामकथा का म्यामांर में प्रचलन–**

   म्यांमार में 1973 में एक बौद्ध मठ से 80 ताड़पत्रों पर रामावत्थु नामक प्राचीन रामायण की पाण्डुलिपि मिली थी। इसके अतिरिक्त यहाँ अन्य पाँच विभिन्न प्रकार की रामायण है। म्यांमार की रामायण में भातृप्रेम का स्वर प्रमुखता से है।

2. **रामायण या रामकथा का लाओस में प्रचलन–**कम्बोज तथा श्याम देश से होता हुआ रामायण लाओस पहुँचा। फ्रा लाक फ्रा लाम (प्रिय लक्ष्मण और प्रिय राम) लाओस मे लोकप्रिय रामायण के तीन रूपान्तरणों में से एक है। इसमें लाओस के जन जीवन का समग्र विश्वकोष है। लाओस में प्रचलित रामायण में आपसी स्नेह सम्बन्धों को रेखांकित किया गया है।

अभ्यास प्रश्न–इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखेंगे।